आकलन का उद्देश्य

Purpose of Assessment

2.0 उद्देश्यः

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- ❖ कक्षा शिक्षण में अधिगम प्रक्रिया के लिए आकलन (Assesment) की भूमिका को समझ सकेंगे ।
- ❖ असफल छात्रों के परिणाम के आकलन के आधार पर पृष्ठ पोषण (Feed Back) दे सकेंगे ।
- ❖ कक्षोन्नति एवं अधिगम हेतु आकलन के उद्देश्य एवं महत्व को समझ सकेंगे ।
- ❖ मूल्यांकन (Evaluation) प्रक्रिया में ग्रेडिंग प्रणाली का प्रयोग करना सीख सकेंगे ।
- ❖ स्थानन (Placement) हेतु आकलन की भूमिका एवं महत्ता को समझ सकेंगे ।
- ❖ छात्र की प्रगति एवं प्रमाणन(Certification) के लिए आकलन के ज्ञान का उपयोग कर सकेंगे ।
- ❖ रचनावादी प्रतिमान में आकलन के प्रयोजनों को समझ सकेंगे ।

2.1 परिचय :

आकलन की प्रकृति अनौपचारिक होती है । यह अभौतिक राशि को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है । इससे आशय विकास के किसी गुणधर्म या पहलू का आकलन करने से है । हांलाकि मापन की तरह आकलन में भी अंक प्रदान किये जाते हैं, लेकिन ये अंक ऐसी राशियों को प्रदान किए जाते है, जिनका भौतिक रूप में अस्तित्व नहीं होता है, अतः अंक प्रदान करने के पश्चात् भी उन अभौतिक राशियों के बारे में सम्पूर्ण सूचना प्राप्त नहीं होती है । जैसे –

(अ) रीना को गणित विषय में 65 अंक प्राप्त हुए हैं ।

(ब) नीलम ने सामाजिक विज्ञान विषय में 78 अंक प्राप्त किए हैं ।

विद्यार्थियों की उपलब्धि को ज्ञात करते समय अध्यापक द्वारा किसी मानक के विरूद्ध मूल्य निर्णय करना आकलन कहलाता है । प्रक्रिया के आधार पर आकलन को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है –

2.1.1 भौतिक आकलन

Scanned with CamScanner

भौतिक आकलन में भौतिक गुणों जैसे– लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई एवं भार आदि को मापा जाता है । इस आकलन को परिणात्मक आकलन भी कहते हैं ।

2.1.2 मानसिक आकलन

मानसिक आकलन में मानसिक क्रियाओं जैसे – बुद्धि, रूचि, उपलब्धि एवं अभियोग्यता आदि का आकलन किया जाता है । यह गुणात्मक आकलन भी कहलाता है ।

2.2 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आकलन की भूमिका :

छात्रों में अधिगम पश्चात् उपलब्धि से संबंधित साक्ष्यों को संकलित करने की प्रक्रिया परीक्षा कहलाती है । परीक्षा में लिखित, मौखिक एवं प्रायोगिक परीक्षाएँ सम्मिलित है । परीक्षा शैक्षिक सत्र पर्यन्त चलती है जो छात्र के मानसिक विकास तथा अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करने में सहायता प्रदान करती है । ये छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की प्रगति का मूल्यांकन करती है तथा शिक्षकों को छात्रों की कक्षोन्नति (Promotion) करने में सहायता मिलती है । आकलन के कुछ महत्वपूर्ण गुण इस प्रकार है –

1. यह मूल्यांकन में सहायक है ।
2. इससे प्राप्त परिणामों में वस्तुनिष्ठता पाई जाती है ।
3. इसकी व्यावहारिक प्रक्रिया अत्यन्त सरल है ।
4. इसके द्वारा परिणामों को सरलता से प्रस्तुत किया जा सकता है ।
5. इससे छात्रों की कक्षोन्नति करने में सहायता मिलती है ।

शिक्षण प्रक्रिया में आकलन छात्रों की शैक्षिक कठिनाइयों, कमियों एवं दुर्बलताओं की जानकारी को खोजने में सहायता प्रदान करता है तथा उनके उपचारात्मक शिक्षण के माध्यम से कमियों को दूर करने का मार्ग प्रशस्त करता है । अनुसंधान के क्षेत्र में शिक्षण से संबंधित शोध कार्य हेतु निष्कर्ष निकालने के लिए आकलन आँकड़े प्रदान करता है तथा भविष्य के लिए पूर्वकथन (Prediction) भी किया जा सकता है ।

शैक्षिक दर्शनशास्त्र के अनुसार शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है । इसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम तीनों आपस में अंर्तसंबंधित होते हैं । अधिगम की प्रक्रिया से बालक नये ज्ञान एवं अनुभवों को सीखता है तथा अपने व्यवहार में उचित एवं वांछनीय परिवर्तन लाता है साथ ही साथ पाठ्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है । शिक्षण की प्रक्रिया छात्र के ज्ञान, अधिगम क्षमता, अवबोध, कौशल, रूचि इत्यादि को ध्यान में रखकर की जाती है । शैक्षिक प्रक्रिया को निम्न त्रिध्रुवीय रेखाचित्र में प्रस्तुत किया जा सकता है ।

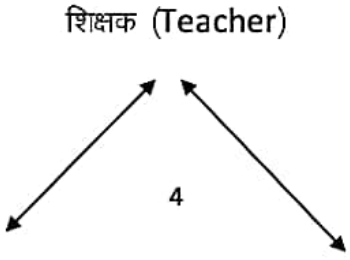

Scanned with CamScanner

विद्यार्थी (Student) ⟷ पाठ्यक्रम (Curriculum)

चित्र : शिक्षण की प्रक्रिया (Process of Teaching)

अधिगम प्रक्रिया में छात्र शिक्षक के माध्यम से नवीन परिस्थितियों ज्ञानार्जन करता है । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अधिगम अनुभव किसी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के मध्य छात्रों द्वारा अर्जित अनुभव है । यह अधिगम अनुभव नवीन परिस्थितियों एवं छात्रों के मध्य हुई अन्तःक्रिया का द्योतक है । अधिगम अनुभव को निम्नलिखित दृष्टिकोणों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है –

(अ) क्रिया के आधार पर

(i) मौखिक अधिगम अनुभव (ii) अमौखिक अधिगम अनुभव

(ब) अधिगम के प्रकार के आधार पर –

(i) ज्ञानात्मक अधिगम अनुभव (ii) भावात्मक अधिगम अनुभव (iii) क्रियात्मक अधिगम अनुभव

(स) अनुभव के आधार पर –

(i) प्रत्यक्ष अधिगम अनुभव (ii) अप्रत्यक्ष अधिगम अनुभव

(द) स्त्रोतों के आधार पर –

(i) औपचारिक अधिगम अनुभव (ii) अनौपचारिक अधिगम अनुभव

विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम के पश्चात् अर्जित ज्ञान एवं वांछित व्यवहार परिवर्तन का आकलन मूल्यांकन के माध्यम से किया जाता है । मूल्यांकन के माध्यम से शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के बारे में पता लगाया जा सकता है, साथ ही मूल्यांकन पाठ को सुनियोजित तरीके से प्रस्तुत करने हेतु भी शिक्षक को प्रेरित करता है ताकि छात्र अधिक से अधिक सीख सके और उनके अनुभवों में वृद्धि हों ।

2.3 भविष्यसूचक निदानात्मक परीक्षण(Diagnostic Prognosis) के निदान :–

निदानात्मक परीक्षण एक ऐसा परीक्षण है जिसे किसी क्षेत्र विशेष में निदान हेतु प्रयोग में लाया जाता है । निदानात्मक परीक्षण द्वारा विद्यार्थियों की अधिगम संबंधी कठिनाइयों एवं कमजोरियों का पता लगाया जाता है । विद्यार्थियों की इन कठिनाइयों एवं कमजोरियों के पीछे क्या कारण है? इस बात की जाँच भी की जाती है । उसी के आधार पर इन समस्याओं के निदान हेतु उपचारात्मक उपाय किए जाते है ।

Scanned with CamScanner

निदान (Diagnosis) शब्द मूलतः चिकित्सा क्षेत्र से जुडा है । रोगी की बीमारी के निदान हेतु डॉक्टर रोगों के कारणों का पता लगाता है, विभिन्न प्रकार के परीक्षण करता है और उसी के आधार पर उपचार करता है । ठीक उसी प्रकार कक्षा में शिक्षक भी असफल छात्रों की कमजोरियों, त्रुटियों एवं असफलता के कारणों का पता लगाकर उनके पीछे के मुख्य कारणों को खोजता है, उनका परीक्षण कर उनके समाधान का प्रयास कर समस्या का समाधान करता है ।

उदाहरण के लिए –

जब कोई विद्यार्थी बार बार प्रयत्न के बाद भी असफल होता है तो वह बहुत मायूस हो जाता है और उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता । ऐसी स्थिति में वह निरंतर पढ़ाई में पिछड़ता जाता है । उसकी असफलता एवं पिछड़ने के कारणों का पता लगाकर उसका निदान करना आवश्यक हो जाता है। शिक्षक निदानात्मक परीक्षण के द्वारा छात्र की अधिगम संबंधी कठिनाइयों का पता लगाता है, तथा उसका उचित ढंग से उपचार करता है ।

गुड (Good) के अनुसार –

"निदान का अर्थ है – अधिगम संबंधी कठिनाइयों और कमियों के स्वरूप का निर्धारण ।"

क्रो एवं क्रो के अनुसार –

"निदानात्मक परीक्षणों का निर्माण विद्यार्थियों की अधिगम संबंधी विशिष्ट कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करने या निदान करने के लिए किया जाता है, पूर्व सावधानी से निर्मित किए गए निदानात्मक परीक्षण के किसी विशेष विषय के अधिगम के किसी विशेष पक्ष पर बल दिया जाता है ताकि छात्र की योग्यताओं और कमजोरियों को ज्ञात किया जा सके और उपचारात्मक शिक्षण का प्रयोग किया जा सके ।"

जैसी समस्या होती है, उसी के अनुसार वैसा ही निदानात्मक परीक्षण तैयार किया जाता है । इन परीक्षणों में अन्य परीक्षणों की भाँति अंक प्रदान न करके छात्रों की कमियों और कठिनाईयों के कारणों को उजागर किया जाता है तथा इन परीक्षणों में दिए गए प्रश्न इकाई विशेष या प्रकरण विशेष से संबंधित होते है । इन प्रश्नों को एक विशेष क्रम में व्यवस्थित किया जाता है ताकि विद्यार्थी को उनका उत्तर देने में असुविधा न हो ।

भविष्यसूचक निदानात्मक परीक्षण के उद्देश्य –

1. विद्यार्थियों की विषय से जुड़ी अधिगम कठिनाइयों तथा कमजोरियों का निदान कर उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करना ।

Scanned with CamScanner

2. संबंधित विषय के विशेष प्रकरण अथवा सामग्री के अध्ययन अधिगम संबंधी छात्रों की कमजोरियों का निदान करना ।
3. विद्यार्थी तथा शिक्षक की अध्ययन अध्यापन की क्रिया में उचित सुधार करना ।
4. मूल्यांकन प्रक्रिया को और अधिक सार्थक एवं प्रभावशाली बनाने में सहायता करना।
5. निदानात्मक परीक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों की अधिगम संबंधी कठिनाइयों एवं कमजोरियों के आधार पर शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करना ।
6. विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं, कुशलताओं एवं अभिरूचियों आदि का पूर्ण ज्ञान प्रदान करना ।
7. निदानात्मक परीक्षण के द्वारा विषय शिक्षण के पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करना ।

भविष्यसूचक निदानात्मक परीक्षण का निर्माण –

भविष्यसूचक निदानात्मक परीक्षण एक प्रकार से उपलब्धि परीक्षण ही है, परंतु इसका उद्देश्य पूर्णतः भिन्न है । ये छात्र की कमजोरियों दोषों, कठिनाईयों एवं असफलताओं के कारणों का पता लगाने के लिए प्रयोग किया जाता है तथा उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा इन कारणों को दूर करने का प्रयास किया जाता है । इस आधार पर हम कह सकते हैं कि भविष्यसूचक निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक परीक्षण आपस में अन्तः संबंधित है और एक–दूसरे पर आश्रित भी ।

उपलब्धि एवं निदानात्मक परीक्षणों में अंतर

(Difference between Achievement and Diagnostic Tests)

क्र.	उपलब्धि परीक्षण (Achievement Tests)	निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Tests)
1	इन परीक्षणों के माध्यम से छात्र की विषय विशेष की योग्यता का मापन किया जाता है । (छात्र कितना जानता है?)	इन परीक्षाओं का उद्देश्य ऐसे कारकों तथा त्रुटियों को खोज करना है, जो छात्र की विषय विशेष की प्रगति में बाधक है । (छात्र कितना जानता है?)
2	इन परीक्षणों के परिणामों के आधार पर परीक्षक अथवा अध्यापक छात्र की भविष्यिक चयन प्रक्रिया, नियोजन, कक्षोन्नति अथवा वर्गीकरण प्रक्रिया सुनिश्चित करता है ।	इन परीक्षणों के कठिनाइयों के निवारण हेतु उपचारात्मक (Remedial) शिक्षण की व्यवस्था करता है ।
3	इन परीक्षणों के मानक विषय अत्यन्त व्यापक होता हैं ।	इन परीक्षणों का विषय क्षेत्र सामान्यतः कुछ ही कौशलों (Skills) की प्राप्ति तक सीमित रहता

Scanned with CamScanner

		है।
4	उपलब्धि परीक्षणों के मानक (Normal) राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किए जाते हैं ।	इन परीक्षणों के मानक स्थापित करना यद्यपि असम्भव तो नहीं फिर भी, दुरूह अवश्य है । यह सम्भव ही प्रतीत नहीं होता है कि हम पूरे देश में छात्रों को किसी विषय विशेष सम्बन्धी कमजोरियों का एक प्रतिनिधि न्यादर्श प्राप्त कर सके ।
5	इन परीक्षणों के शताशीय मानक तथा ग्रेड तुल्य मानक आसानी से तैयार किए जा सकते हैं ।	इन परीक्षणों के लिए ये दोनों ही प्रकार के मानक स्थापित करना सम्भव नहीं है ।
6	ये परीक्षण कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी पर प्रशासित किए जा सकते हैं ।	ये परीक्षाएँ केवल उन्हीं विद्यार्थियों को दी जाती है, जो कक्षा में अपेक्षित प्रगति करने में कठिनाई का अनुभव कर रहे होते हैं ।
7	इन परीक्षणों का अंकन, प्रशासन एवं व्याख्या सरल है ।	इन परीक्षणों का अंकन, प्रशासन एवं व्याख्या अपेक्षाकृत अधिक कठिन है ।
8	इन परीक्षणों में समय एवं शक्ति कम मात्रा में व्यय होती है ।	इन परीक्षणों में समय एवं शक्ति अधिक मात्रा में व्यय होती है ।
9	इसमें समय सीमा होती है । (Speed Test)	इसमें समय सीमा नहीं होती । (Power Test)
10	इस परीक्षण में अंक प्रदान किए जाते है ।	छात्रों की कोई अंक प्रदान नहीं किए जाते ।

2.4 अधिगम का निरीक्षण –

अधिगम निरीक्षण में छात्र के व्यवहार का बाह्य रूप से निरीक्षण करते हैं । उदाहरणस्वरूप हम किसी व्यक्ति को ऊँची आवाज में बोलते हुए देखते हैं । उसकी आँखें लाल होती हैं और हाथ–पैर काँप रहे होते हैं । हम तुरंत जान लेते हैं कि वह व्यक्ति क्रोध की अवस्था में है । इस प्रकार हम किसी व्यक्ति के बाह्य व्यवहार को देखकर उसकी मानसिक अवस्था का अनुमान लगा सकते हैं । ठीक इसी प्रकार से अधिगम निरीक्षण में छात्र के हाव–भाव उसके अधिगम स्तर को अभिव्यक्त करता हैं ।

गुडइनक ने निरीक्षण विधि के संबंध में यह बात कही है –

"इस विधि के अंतर्गत व्यक्ति की प्रतिदिन की क्रियाओं और व्यवहारों का निश्चित समय पर और वक्त वक्त पर विवरण एकत्रित किया जाता है ।"

Scanned with CamScanner

2.4.1 निरीक्षण की अवस्थाएँ –

निरीक्षण की तीन अवस्थाएँ हैं –

(क) किसी व्यक्ति के व्यवहार अथवा रहन सहन का ध्यानपूर्वक अवलोकन करना ।

(ख) उसके व्यवहार का अवलोकन कर उसकी मानसिक स्थिति का पता लगाना, यथा– जब हम किसी को मुस्कुराते हुए देखते हैं, तो मालूम हो जाता है कि वह प्रसन्न है ।

(ग) अपने अनुभवों के आधार पर दूसरों के व्यवहार की व्याख्या करना । यथा कोई व्यक्ति रो रहा है, तो हम अपने अनुभवों के आधार पर कह देते है कि वह दुःखी है ।

2.4.2 निरीक्षण के प्रकार (Types of Observation)

निरीक्षण प्रायः दो प्रकार का होता है –

(क) साधारण निरीक्षण (Informal Obeservation)

(ख) नियंत्रित निरीक्षण (Controlled Obeservation)

(क) साधारण निरीक्षण (Informal Obeservation) –

क्रो तथा **क्रो** ने साधारण निरीक्षण की परिभाषा इस प्रकार से की है –

"माता–पिता एवं अन्य वयस्क व्यक्ति (शिक्षक), बालकों की प्रतिदिन की चेष्टाओं का जो निरीक्षण करते है, वह साधारण निरीक्षण है ।"

"By informal observation is meant the attention given by parents and other adults to the day to day behaviour reaction of the child."

- Crow & Crow, : 'Child Psychology', 1942 P.9

(ख) नियंत्रित निरीक्षण (Controlled Obeservation) – बोनी और हेम्पलमैन (Bonny & Hampleman) के मतानुसार, यह दो प्रकार का होता है –

(क) किसी निश्चित कार्य या व्यवहार का निरीक्षण ।

(ख) प्रक्षेपणकर्ता द्वारा बनायी गयी परिस्थितियों में निरीक्षण ।

लिखने के आधार पर निरीक्षण दो प्रकार का है –

Scanned with CamScanner

(i) अलिखित निरीक्षण (Unrecorded oberservation) ।

(ii) लिखित निरीक्षण (Recorded oberservation) ।

व्यक्तियों की संख्या के आधार पर निरीक्षण के ये भेद किये जा सकते हैं –

(i) व्यक्तिगत निरीक्षण (Individual oberservation) ।

(ii) सामूहिक निरीक्षण (Group oberservation) ।

2.4.3 निरीक्षण के लाभ (Merits of observation)

1. एक ही व्यवहार कई निरीक्षणकर्ता देखते हैं, इसलिए विधि पूरी तरह से वैज्ञानिक है ।
2. इस विधि का प्रयोग बालकों, पागलों, पशुओं और असामान्य व्यक्तियों के लिए भी किया जा सकता हैं ।
3. इस विधि में स्मृति से कोई सहायता नहीं ली जाती है ।
4. इस विधि में निरीक्षक और विषयी दोनों भिन्न भिन्न होते हैं ।
5. निरीक्षण विधि का प्रयोग सभी स्थलों पर हो सकता हैं ।
6. इस विधि से विशेष परीक्षण प्राप्त व्यक्तियों की आवश्यकता नहीं होती हैं ।

2.4.4 निरीक्षण की सीमाएँ (Limitation of Observation)

1. विशेषज्ञों का आडम्बरपूर्ण व्यवहार ।
2. दूसरे व्यक्तियों में अपने विचारों की झलक देखना ।
3. एक ही प्रकार का व्यवहार भिन्न–भिन्न मानसिक अवस्थाओं का द्योतक हो सकता हैं । व्यक्ति सुख और दुःख दोनों में अश्रुपात करता हैं ।
4. निरीक्षक का पक्षपात ।
5. व्यवहार का अस्पष्ट होना ।
6. बालक को बालक न समझकर प्रौढ़ व्यक्ति का लघु रूप समझना ।
7. इसमें समय अधिक लगता है ।
8. अपरिचित व्यक्तियों के सामने बालक का व्यवहार स्वाभाविक नहीं रहता ।
9. विभिन्न निरीक्षणों के विवरणों में भिन्नता पायी जाती हैं ।

2.5 पृष्ठ पोषण प्रदान करना

Scanned with CamScanner

कक्षाओं में त्रैमासिक एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं की उत्तर–पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को पृष्ठ पोषण दिया जाता हैं ।

प्रश्न रचना में सुधार लाने के साथ–साथ उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन में परिवर्तन लाना आवश्यक है । यद्यपि अभी इस पर अधिक अध्ययन नहीं हुए तथापि निम्नांकित विधियों से निबंधात्मक परीक्षणों के मूल्यांकन को वैज्ञानिक बनाया जा सकता हैं –

1. ऐसे ही व्यक्ति परीक्षक नियुक्ति किए जाएँ जिन्हें पर्याप्त शिक्षण अनुभव हों तथा जो प्रशिक्षित हों और छात्रों को उचित पृष्ठ पोषण प्रदान कर सकें।
2. उत्तरों के नमूने प्रत्येक प्रश्न के लिये दिये जाएँ तथा अंकन विधि के बारे में स्पष्ट निर्देश हो ।
3. उत्तर के प्रत्येक महत्वपूर्ण भाग के लिये अलग–अलग अंक निर्धारित किये जाऐं । अतिरिक्त तथ्यों के लिए कुछ अंक छोड़ देने चाहिए जो विस्तृत व्याख्या, भाषा शैली आदि पर अलग से दिये जा सकें ।
4. ग्रीन व उसके सहयोगियों के अनुसार यथासम्भव उत्तर पुस्तिकाओं का अंकन उसी व्यक्ति के द्वारा किया जाए जिसने प्रश्न पत्र का निर्माण किया है ।
5. कोचरन तथा वीडमैन के अनुसार पहले सभी उत्तर पुस्तिकाओं को पढ़कर विद्यार्थियों के बारे में सामान्य धारणा बना लेनी चाहिये फिर प्रत्येक प्रश्न लेकर सभी उत्तर पुस्तिकाओं में जाँचना चाहिये, लेकिन ऐसा करने से पहले, उत्तर क्या होना चाहिये, उत्तर के किस भाग पर कितने अंक देने है, यह निश्चय कर लेना चाहिये ।
6. फलांक देते समय गलतियों पर अंक काट लेने चाहिये । अंक किस प्रकार और कितने काटे जायेंगे यह भी पहले से निर्धारित होना चाहिये ।
7. मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता लाने के लिये विद्यार्थियों को पृष्ठ पोषण निष्पक्षता के साथ दिया जाना चाहिए ।

2.6 कक्षोन्नति(Promotion) :

ज्ञानार्जन सभी छात्र–छात्राओं का एक जैसा नहीं होता । उसमें बहुत अंतर पाया जाता है । किसी कक्षा विशेष के बालक–बालिकाओं ने कितनी मात्रा में ज्ञानार्जन किया हैं, इसकी परीक्षा हम निष्पत्ति परीक्षणों के द्वारा करते हैं और इसी के आधार पर कक्षोन्नति दी जाती है। दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि निष्पत्ति परीक्षण पाठशाला में विषय संबंधी अर्जित ज्ञान की जाँच है । इस परीक्षण के द्वारा अध्यापक यह जानकारी प्राप्त कर सकते है कि किसी विद्यार्थी में कक्षा ने किसी विषय में कितनी प्रगति की है ? उसने विषय संबंधी सभी बातें अधिगम की है, अथवा नहीं । अतएव निष्पत्ति परीक्षण के द्वारा अर्जित ज्ञान का मापन किया जाता है ।

Scanned with CamScanner

निष्पत्ति परीक्षण की परिभाषा (Definition of Achievement Test)

भिन्न–भिन्न निर्देशनविदों ने निष्पत्ति परीक्षण की जो परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं, उन्हें इस प्रकार से व्यक्त किया जा सकता हैं –

(क) बकिंघम (Bingham) ने निष्पत्ति परीक्षण के भाव को इस प्रकार स्पष्ट किया है –

"पाठशाला या पाठशाला के बाहर अर्जित ज्ञान का मापन जब प्रशिक्षण की अवधि और प्रकृति के आधार पर किया जाता है, तो उसे निष्पत्ति परीक्षण कहते है ।"

According to Bingham-

"Measurement of past accomplishment both in and out of school when judged in relation to the length and character of the training or experience is called Achievement Test"

(ख) डोनॉल्ड सुपर (Donald Super) ने निष्पत्ति परीक्षण को निपुणता का दर्जा देते हुए, उसे इस प्रकार से परिभाषित किया है –

"कोई भी निष्पत्ति या निपुणता परीक्षण यह निर्धारित करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है कि व्यक्ति ने क्या सीखा है, कितना सीखा है अथवा कोई कार्य वह कितनी निपुणता से कर सकता है । इसका मुख्य ध्यान भूतकाल की उपलब्धि पर है । इसका भविष्य से कोई सम्बन्ध नहीं ।"

"An Achievement as Proficiency test is used to ascertain what and how much has been learned or how well a task can be performed. The focus is on evaluation of the past without reference to the future." – **Donald Super** : 'The Psychology of Careers."

(ग) फ्रीमैन (Freeman) के विचार–"उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो एक विशेष विषय या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ एवं कौशल का मापन करता है ।"

"A test of educational achievement is one designed to measure knowledge, understanding or skills in a specified subject or a group of subjects. "

(घ) सुपर (Super) के शब्दों में– "एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिये प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भलीभाँति कर लेता है ।"

Scanned with CamScanner

"An achievement or proficiency test is used to ascertain what and how much has been learns or how well a task has been performed. "

(ड.) इबेल **(Ebel)** के शब्दों में– "उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है ।"

"An achievement test is one designed to measure a student's grasp of knowledge or his proficiency in certain skills."

निष्पत्ति परीक्षणों के प्रकार (Kinds of Achievement Test)

निष्पत्ति परीक्षाओं का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता हैं –

प्रथम वर्गीकरण– इसके अनुसार ये परीक्षाएँ दो प्रकार की होती हैं –

(क) **सामान्य निष्पत्ति परीक्षा (General Achievement Test)** – इसके द्वारा बालक या व्यक्ति के अर्जित ज्ञान की परीक्षा होती है ।

(ख) **निदानात्मक परीक्षा (Diagnostic Test)** – इसके द्वारा यह पता चलता है कि अध्यापक द्वारा दिया गया ज्ञान, कहाँ पर सफल हुआ है, कहाँ पर असफल । इस परीक्षा द्वारा बालक की संबलता–निर्बलता का पता चलता है ।

द्वितीय वर्गीकरण –इस विधि की दृष्टि से निष्पत्ति परीक्षाएँ चार प्रकार की हो सकती हैं ।

(i) **मौखिक परीक्षा (Oral Tests)** – इसमें छात्र–छात्राओं से लिखित के स्थान पर मौखिक प्रश्न पूछे जाते हैं ।

(ii) **क्रियात्मक परीक्षण (Performance Tests)** – इनमें कागज–कलम का सहारा नहीं लिया जाता वरन् चित्रों तथा लकड़ी के टुकड़ों आदि का प्रयोग किया जाता है । इनमें शाब्दिक ज्ञान को कोई महत्व नहीं दिया जाता है ।

(iii) **निबंधात्मक परीक्षण (Essay Type Tests)** – इन परीक्षणों में प्रश्नों का उत्तर निबंध के रूप में देना होता हैं । इनमें वही छात्र अधिक अंक प्राप्त करते है –

क. जिनका ज्ञान अच्छा हो ।

ख. जिनका लेखन सुंदर हो ।

Scanned with CamScanner

ग. जिनकी स्मरण/रटन शक्ति अच्छी हो ।

(iv) वस्तुनिष्ठ परीक्षण **(Obejective Tests)** – इन परीक्षाओं की ये विशेषताएँ है –

क. प्रश्न छोटे–छोटे होते हैं ।

ख. भाषा–अधिकार की आवश्यकता नहीं होती है ।

ग. प्रश्नों के उत्तर पहले से ही निश्चित होते हैं । इसलिए जाँच–कार्य और अधिक सरलता से हो जाता है ।

घ. छात्रों को लंबे उत्तर नहीं लिखने पड़ते हैं । वे या तो 'हाँ' और 'नहीं' में उत्तर देते हैं या ठीक उत्तरों को रेखांकित करते हैं ।

ड़. जिस प्रकार बुद्धिमापक परीक्षाओं में बुद्धि–लब्धि निकालते हैं, उसी प्रकार इस परीक्षण में हम ज्ञान–लब्धि (Achievement Quotient) तथा शिक्षा–लब्धि (Educational Quoatient) निकालते हैं । इन परीक्षणों के द्वारा छात्रों की प्रगति का पता चल सकता हैं ।

शिक्षा की प्रक्रिया बहुत सोच–विचार कर आयोजित की जाती है । बालक को जो शिक्षा दी जाती है, उसका उद्देश्य है – ज्ञान में वृद्धि के द्वारा व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना जिसके फलस्वरूप उसे जीवन में लाभ होता है ।

एडम्स **(Adams)** का विचार है – "शिक्षा एक सचेतन एवं विचारपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्तित्व दूसरे पर इसीलिए प्रभाव डालता है कि दूसरे का विकास और परिवर्तन हो सके।"

"It is a conscious and deliberate process in which one personality acts on another in order to modify the development of that other "

इस प्रकार शिक्षा की प्रक्रिया के अंतर्गत सभी स्तरों पर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है और इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाओं का आयोजन किया जाता है । शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य इन्हीं शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है अर्थात् छात्रों ने किस सीमा तक अपनी योग्यताओं का विकास किया है, यह जानने के लिये शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है । विद्यार्थियों, अध्यापकों, शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम या शिक्षा के किसी भी पहलू का मापन उपलब्धि परीक्षण द्वारा ही सम्भव है ।

विद्यालय में छात्रों ने विभिन्न विषयों में कितना ज्ञान अर्जित किया है, इसका मापन करने के लिये उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया जाता है । इस प्रकार उपलब्धि परीक्षण का तात्पर्य ऐसे परीक्षणों से है जो एक

Scanned with CamScanner

निश्चित समयावधि के प्रशिक्षण के पश्चात् किसी क्षेत्र विशेष में व्यक्ति के ज्ञान का मापन करते हैं । यह परीक्षण विभिन्न विषयों में ज्ञान के मापन के अतिरिक्त अध्यापक को यह जानने में भी सहायता देते हैं कि उसे शिक्षण कार्य में किस सीमा तक सफलता प्राप्त हुई हैं ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी विशेष क्षेत्र में शिक्षण के पश्चात् उस क्षेत्र में छात्र की योग्यता या शक्ति के विकास की मात्रा का मापन करने वाले उपकरणों को उपलब्धि परीक्षण कहते हैं । ये परीक्षण शिक्षण सत्र के अंत में मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को कक्षोन्नति प्रदान करने में सहायक होते हैं ।

2.7 स्थानन (Placement)

छात्रों के आकलन एवं मूल्यांकन के पश्चात् यह भी आवश्यक है कि सभी जानकारियों एवं तथ्यों को एकत्रित करने के बाद तथा साक्षात्कार करने के बाद उसको उपयुक्त स्थान दिलवाने के लिए प्रयास किया जाए ।

स्थानन का आशय (Meaning of Placement)

सामान्य शब्दों में स्थानन **(Placement)** का अर्थ है–**'जीविका प्राप्ति ढूंढने वाली क्रिया'** जो कि छात्र को व्यवसाय/रोजगार प्रदान करने में सहायक होती है ।

एण्ड्रयु एवं विली के अनुसार–

"स्थानन उन सभी क्रियाओं की ओर संकेत करती है जो छात्र के किसी जीविका में अथवा शैक्षिक प्रशिक्षण में प्रवेश के समय सहायतार्थ की जाती है, जिससे वह इनमें पर्याप्त समायोजन स्थापित कर सके ।"

"Placement refers to all of the activities performed in assisting the student to make an adequate adjustment to the next step in his training whether that he is taking a full or part time job or making a choice of additional educational training".

- Andrew & Willey

विद्यालय/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् किसी जीविका/रोजगार में प्रवेश करने में युवाओं को कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हैं । स्थानन में छात्रों को उन रिक्तियों (Vacancies) के बारे में अवगत कराया जाता हैं, जिनमें वे अपने ज्ञान एवं प्रशिक्षण कौशल के आधार पर

Scanned with CamScanner

रोजगार खोज सकते है। स्थानन का प्रभाव समाज एवं देश पर भी पड़ता है । जब छात्र स्थानन (Placement) के माध्यम से अच्छे स्थानों पर नियुक्तियाँ पाते हैं, तो आर्थिक पहलू भी समाज के विकास पर प्रभाव डालता है और उचित जीविका की प्राप्ति से समाज की आय में वृद्धि होती है । अपनी योग्यता और रूचि के अनुसार स्थान एवं जीविका पाने के पश्चात् व्यक्ति अपने कार्य में और अधिक दक्षाता प्राप्त करता है तथा उत्पादन को बढ़ाने में भी अपना सहयोग प्रदान करता है ।

जार्ज ई. मेयर्स के अनुसार–

"एक नवयुवक को विद्यालय से व्यावसायिक क्रियाओं में भेजना शैक्षिक सेवा है, अतः समाज द्वारा चुनी हुई शैक्षिक सस्था विद्यालय का ही यह एक उचित कार्य है ।"

According to Geaorge E. Mayers

"The transfer of youths from school to occupational activities is an educational service and this is a proper function of society's chosen educational agency the school system."

महाविद्यालय/विद्यालय नियुक्ति संबंधी कार्य समाज के सहयोग से सफलतापूर्वक कर सकता है । इसमें निम्न बिंदु सम्मिलित हैं ।

1. समाज के सहयोग से नियुक्ति –

जीविका में नियुक्ति कराने से पहले नियुक्ति/जीविका से संबंधित समस्त सूचनाएँ विद्यालय की नियुक्ति सेवा को प्राप्त होनी चाहिए । निकट के समाज एवं क्षेत्र के व्यवसाय की मांग एवं व्यावसायिक अवसर से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित करनी चाहिए । विद्यालय ये सूचनाएँ स्थानीय नियुक्ति संस्थाओं से प्राप्तकर सकता है । अतः विद्यालय को इनके साथ सक्रिय संबंध स्थापित करना चाहिए ।

2. नियुक्ति क्रियाएँ सबके सहयोग से –

नियुक्ति सेवा का कुछ विद्यालयों में केन्द्रीय संगठित रूप होता है, परंतु नियुक्ति संबंधी कार्य केवल कुछ विशेषज्ञों द्वारा नहीं होना चाहिए । विद्यालय के सभी अध्यापकों एवं निर्देशन से संबंधित कर्मचारियों को सामूहिक रूप से यह कार्य करना चाहिए । एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सामाजिक संस्थाओं या नियुक्तिकर्ताओं को जो छात्र भेजे जायें, वे उस कर्मचारी द्वारा भेजे जाएँ जिसके पास इन व्यापारिक संस्थाओं से संबंध स्थापित करने का समय हो । जीविका नियुक्ति के निम्नलिखित पद हैं :

Scanned with CamScanner

1. **अभिविन्यास (Orientation)** :– यह प्रथम चरण है। इसमें सबसे पहले छात्र को व्यावसायिक जीवन की विशेषताओं से अवगत कराया जाता हैं। यह कार्य छात्रों के समूह में किया जा सकता है ।
2. **व्यावसायिक क्षेत्र का अभिविन्यास (Orientation to Occupational Field)** :– ये दूसरा चरण है । इस चरण में छात्रों को समूह में जीविका समूह का ज्ञान कराया जाता है, जिनमें समान रूचि, अभिरूचि, तैयारी और योग्यता की आवश्यकता होती है ।
3. **स्वयं को व्यावसायिक जीवन से संबंधित करना (To corelate the self from the professional life)**:– यह तृतीय चरण है । यहाँ छात्र स्वयं की विशेषताओं से परिचित होता है तथा वह व्यवसाय से उसका संबंध देखता है । इस पद में छात्र यह भी जानने का प्रयास करता है कि कौन–कौन से व्यवसाय ऐसे है जो छात्र के लिए उपयुक्त नहीं हैं ।
4. **व्यावसायिक क्षेत्र का चुनाव (Selection of professsional field)**– यह चतुर्थ चरण है । यह कार्य व्यक्तिगत वार्तालाप के द्वारा पूर्ण होता है । परामर्शदाता छात्र की सहायता करता है ।
5. **जीविका नियुक्ति (Appointment for employment)**– व्यावसायिक क्षेत्र का चुनाव करने के बाद जीविका नियुक्ति का प्रश्न आता है। वह कार्य सहयोग द्वारा पूरा होता है ।
6. **उत्तरोत्तर अध्ययन(Post employment study)** – नियुक्ति के बाद यह देखा जाता है, कि छात्र का व्यावसायिक चयन कहाँ तक उचित रहा ।

छात्र का किसी जीविका में स्थानन कराते समय व्यक्तिगत परामर्श की आवश्यकता भी पड़ती है । नियुक्ति सेवा का मुख्य उद्देश्य है कि छात्र व्यवसाय में प्रभावशाली समायोजन कर सके । इसके लिए यह आवश्यक है कि छात्र की रूचि तथा योग्यता को व्यवसाय की विभिन्न परिस्थितियों के साथ मिलाया जाए । नियुक्ति सेवा को प्रभावशाली परामर्श देने का प्रयत्न करना चाहिए । इसके लिए नियुक्ति सेवा विद्यालय के परामर्शदाता का सहयोग प्राप्त कर सकती है या अपना पृथक परामर्शदाता रख सकती है । स्थानन (Placement) के लिए अधिक कुशल परामर्शदाता होना चाहिए, क्योंकि जो छात्र जीविका प्राप्ति में मार्गदर्शन के अभाव में असफल हो जाते हैं वे अनुभवी परामर्शदाता द्वारा उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर जीविका प्राप्ति में सफल हो सकें ।

स्थानन प्रोफार्म

सेवा में,

.....

.....

Scanned with CamScanner

निम्नलिखित सूचना आपकी सेवा में प्रेषित है –

1. छात्र का नाम : .....
2. पिता का नाम : .....
3. स्थायी पता : .....
4. छात्र की उम्र : .....
5. विवाहित/अविवाहित : .....
6. कक्षा जो उत्तीर्ण की : .....वर्ष.....
7. विशेष दक्षता : .....
   (अ) (क) कला (ख) टाइपिंग (ग) कृषि (घ) मशीन
   (ब) अन्य कोई दक्षता : .....
8.

व्यक्तित्व गुण	अतिउत्तम	उत्तम	अच्छा	संतोषप्रद	निम्न
अ) चरित्र					
आ) सहयोग					
इ) निर्भरता					
ई) उत्तरदायित्व पालन					

9. छात्र के शौक (Hobbies) : .....

.....

10. पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ जिनमें छात्र ने सक्रिय भाग लिया :.....

.....

.....

11. विषय जिनमें अधिक अंक प्राप्त किये :

    (अ) ..... (आ) ..... (इ) .....

12. स्वास्थ्य : अतिउत्तम..... उत्तम..... अच्छा ..... कम अच्छा .....

13. छात्र के बारे में परामर्शदाता के विचार

.....

.....

.....

हस्ताक्षर

Scanned with CamScanner

2.8 प्रमाणन (Certification)

आकलन शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया (Learning Process) का एक अभिन्न हिस्सा है । छात्र की अधिगम क्षमता और दक्षता का मूल्यांकन विद्यालयीन प्रक्रिया के अंतर्गत किया जाता है। इसके लिए विविध गतिविधियों एवं परीक्षाओं का आयोजन समय –समय पर विद्यालय में शैक्षणिक सत्र के दौरान किया जाता है ।

इन विविध गतिविधियों में **लिखित कार्य जैसे** – प्रदत्त कार्य, परियोजना निर्माण, चार्ट निर्माण आदि शामिल हैं । कौशल विकास हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाता है । ये छात्र के सर्वांगीण विकास का मूल्यांकन करने में सहायक होती हैं एवं इसके साथ ही छात्र द्वारा प्राप्त विशेष उपलब्धियों का भी रिकार्ड रखा जाता हैं ।

शैक्षिक गुणवत्ता एवं उपलब्धि स्तर ज्ञात करने के लिए सत्र के दौरान जो शिक्षण कार्यक्रम संचालित किये गये उसके मूल्यांकन के लिए परीक्षा प्रणाली नियोजित तरीके से लागू कर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन कर आंकिक रूप प्रदान करके प्रमाणन प्रदान किये जाते है ।

उदाहरण के लिए–

प्रश्न : कक्षा में शिक्षक अभ्यास कार्य (Home Work) जाँचने के लिए कौन– कौन से तरीके अपनाते है?

(अ) लिखित परीक्षा

(ब) मौखिक परीक्षा

(स) प्रायोगिक परीक्षा

(द) उपरोक्त सभी ।

आकलन के आधार पर प्रमाणन (Certification) के लिए निम्न विशेषताओं को ध्यान में रखा जाता हैं –

1. यह आकलन विद्यार्थी अधिगम की गुणवत्ता को परखने के लिए शिक्षक का मार्ग प्रशस्त करती है ।
2. छात्रों के संदर्भ में अधिगम से संबंधित साक्ष्यों का एकत्रीकरण कर छात्र पोर्टफोलियो को तैयार करना ।
3. ग्रेडिंग के अलग–अलग स्तर छात्रों के प्रस्तुतीकरण (Performance) को दर्शाते हैं ।
4. औपचारिक स्तर की रिपोर्ट लेखन में 5 ग्रेडिंग प्रणाली उपलब्धि के स्तर को बतलाती है कि छात्र अधिगम में कितना सफल हो पाया ?

2.9 ग्रेडिंग (Grading)

Scanned with CamScanner

शिक्षक द्वारा कक्षा में शिक्षण के पश्चात् विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मूल्यांकन के माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है, कि छात्र अधिगम में कितना सफल हो पाया ? आजकल मूल्यांकन में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं । ग्रेडिंग भी मूल्यांकन की एक नयी प्रक्रिया है ।

कक्षाओं में अध्यापन के पश्चात् विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पाठ्यक्रम पूर्ण कराये जाने के बाद त्रैमासिक, अद्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता हैं तथा मूल्यांकन के आधार पर परिणाम तैयार किये जाते हैं । शैक्षिक पद्धतियों में सुधार, पाठ्यक्रमों की पुनः संरचना (Re-structuring) आदि भी मूल्यांकन के परिणामों के आधार पर ही किये जाते हैं । आजकल सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (C.C.E.), प्रश्न बैंक, खुली पुस्तक परीक्षा (Open Book Examination), वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन (Objective Evaluation), ग्रेड प्रणाली आदि प्रचलन में हैं ।

'Grade' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'ग्रेड्स' से हुई है जिसका अर्थ है – **'श्रेणी'** । ग्रेड सिस्टम में पूर्व निर्धारित मापदण्डों के आधार पर छात्रों को उनकी उपलब्धि के अनुसार श्रेणी में विभक्त करने के लिए ग्रेड प्रदान की जाती हैं । विद्यार्थियों के शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में यह उनकी उपलब्धि सम्प्रेषित करने का तरीका है । ग्रेड के द्वारा शिक्षक, छात्र एवं उनके पालक उनकी उपलब्धि के बारे में समझ सकते हैं । छात्रों की उपलब्धि को ज्ञात करना ही ग्रेडिंग का उद्देश्य होता है ।

ग्रेडिंग प्रणाली (Grading System) के द्वारा दो विद्यार्थियों की उपलब्धि की तुलना की जा सकती हैं । साथ ही पाठ्यक्रम की समाप्ति पर यह भी पता चल सकता है कि विद्यार्थी ने क्या प्राप्त किया । परम्परागत् पद्धति के अंतर्गत विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि के आधार पर श्रेणी में विभक्त किया जाता हैं, जैसे–

श्रेणी	**प्रतिशत (कुल प्राप्तांकों में से)**
प्रथम	60 प्रतिशत से अधिक
द्वितीय	45 प्रतिशत से 59.99 प्रतिशत
तृतीय	33 प्रतिशत से 44.99 प्रतिशत
अनुत्तीर्ण	32.99 प्रतिशत से नीचे सभी

ग्रेड प्रणाली में 3 बिंदु, 5 बिंदु, 9 बिंदु अथवा 11 बिंदु मापनी तक विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है । विद्यार्थियों के निष्पादन (Achievement) का मूल्यांकन करने के लिए जिस बिंदु मापनी को प्रयुक्त किया जाना है उसका आधार स्पष्ट रूप से परीक्षकों को बता दिया जाना

Scanned with CamScanner

चाहिए ताकि ग्रेड के द्वारा किसी विशिष्ट मापदण्ड के संदर्भ में विद्यार्थियों के प्रदर्शन और उनके समकक्ष समूह के संदर्भ में विद्यार्थियों की वास्तविक स्थिति को दर्शाया जा सके ।

NCERT की Handbooks में ग्रेड प्रणाली का वर्गीकरण निम्न प्रकार से बतलाया गया है –

1. प्रत्यक्ष ग्रेड प्रणाली (Direct Grade System)
2. अप्रत्यक्ष ग्रेड प्रणाली (Indirect Grade System)
3. निरपेक्ष ग्रेड प्रणाली (Absolute Grade System)
4. सापेक्ष ग्रेड प्रणाली (Relative Grade System)

प्रत्यक्ष ग्रेड प्रणाली (Direct Grade System)

प्रत्यक्ष ग्रेड प्रणाली के द्वारा गुणात्मक मूल्यांकन किया जाता है । इस प्रणाली की सहायता से परीक्षक विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक पक्ष और गैर–संज्ञानात्मक पक्ष का मूल्यांकन अक्षर ग्रेड के द्वारा करता है ।

अप्रत्यक्ष ग्रेड प्रणाली (Indirect Grade System)

अप्रत्यक्ष ग्रेड प्रणाली के अंतर्गत विद्यार्थियों के निष्पादन को अंक प्रदान कर निरपेक्ष या सापेक्ष मानकों के आधार पर ग्रेड्स में बदलकर मूल्यांकन किया जाता है ।

निरपेक्ष ग्रेड प्रणाली (Absolute Grade System)

निरपेक्ष ग्रेड प्रणाली में विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन पूर्व–निर्धारित मानक के आधार पर किया जाता है। इन विद्यार्थियों के निष्पादन को अंक प्रदान कर सम्पूर्ण विषयों के प्राप्तांक का प्रतिशत ज्ञात कर लिया जाता हैं और उन्हें निश्चित मापदण्ड के आधार पर ग्रेड प्रदान की जाती हैं, जैसे –

85 प्रतिशत या इससे अधिक	A
70 प्रतिशत से 84.99 प्रतिशत	B
55 प्रतिशत से 69.99 प्रतिशत तक	C
40 प्रतिशत से 54.99 प्रतिशत	D
40 प्रतिशत से कम	F

सापेक्ष ग्रेड प्रणाली (Relative Grade System)

Scanned with CamScanner

इस सापेक्ष प्रणाली में कोई पूर्व–निर्धारित मानक नहीं होता है। इसके अंतर्गत जिस विद्यार्थी को अधिकतम् अंक प्राप्त हुए है, उसके अंकों को शत्–प्रतिशत मानकर उसके आधार पर शेष सभी विद्यार्थियों का भी मूल्यांकन कर दिया जाता हैं तथा ग्रेड प्रदान कर दी जाती है।

2.10 एक रचनात्मक प्रतिमान में आकलन का उद्देश्य :–

शिक्षा में मापन, मूल्यांकन और आकलन का विशेष महत्व है, क्योंकि इसके द्वारा परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों ही प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त होती हैं । छात्रों के व्यवहार में कितना परिवर्तन हुआ तथा उनका स्तर क्या रहा ? इसके बारे में भी निर्णय मूल्यांकन एवं आकलन के द्वारा ही लिये जाते हैं ।

मूल्यांकन एवं आकलन एक सतत् प्रक्रिया है, जो यह ज्ञात करने में सहायक है कि अधिगम अनुभव विद्यार्थी में उचित ढंग में परिवर्तन कर रहे हैं अथवा नहीं ।

एक रचनात्मक प्रतिमान में आकलन के प्रमुख उद्देश्यों को निम्न प्रकार से बतलाया जा सकता हैं –

1. विद्यार्थियों की प्रगति का पता लगाना ।
2. यह ज्ञात करना कि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हुई हैं अथवा नहीं ।
3. विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रोत्साहन देना ।
4. विद्यार्थियों की प्रगति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
5. विद्यार्थियों में विभिन्न कौशल का विकास करना ।
6. शिक्षकों की कार्यकुशलता का पता लगाना ।
7. विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाईयों का पता लगाना ।
8. प्रचलित पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन की आवश्यकता को ज्ञात कर संशोधन करना ।
9. शिक्षण विधियों की उपयुक्तता की जाँच करना ।
10. ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए प्रशिक्षण के परिणामों का मूल्यांकन करना ।
11. बालकों को विभिन्न विषयों एवं क्रियाओं में वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान प्रदान करना ।
12. विद्यार्थियों की उपलब्धि (Achievement) में सामान्य स्तर का निर्धारण करना ।

2.11 इकाई सारांश याद रखने योग्य बिंदु :

- आकलन अधिगम का मूल्यांकन करता है ।

Scanned with CamScanner

- आकलन तीन रूपों में मापा जाता हैं –
    - स्व आकलन
    - सहपाठी आकलन
    - ट्यूटर आकलन
- प्रमाणन में ग्रेडिंग एवं अंक प्रदान कर छात्र अधिगम क्षमता अथवा उपलब्धि का रिकार्ड रखा जाता है ।
- छात्र की अधिगम दक्षता की जाँच में निम्न परीक्षाएँ सम्मिलित हैं –
    - प्रायोगिक परीक्षा
    - मौखिक परीक्षा
    - लिखित परीक्षा
- ग्रेडिंग मूल्यांकन की एक नयी प्रक्रिया है ।
- NCERT में निम्न ग्रेड प्रणाली दर्शायी गयी है ।
    - प्रत्यक्ष ग्रेड प्रणाली
    - अप्रत्यक्ष ग्रेड प्रणाली
    - निरपेक्ष ग्रेड प्रणाली
    - सापेक्ष ग्रेड प्रणाली
- स्थानन (Placement) का अर्थ है – जीविका प्राप्ति हेतु रोजगार प्राप्त करने वाली प्रक्रिया।
- भविष्यसूचक निदानात्मक परीक्षण एक ऐसा परीक्षण है, जिसे किसी क्षेत्र विशेष में निदान हेतु प्रयोग में लाया जाता है ।
- वर्तमान में आकलन की दो प्रविधियाँ प्रयुक्त की जाती हैं –
    - योगात्मक आकलन (Summative Assesment)
    - रचनात्मक आकलन (Formative Assesment)

Scanned with CamScanner

- पृष्ठ पोषण (Feed Back) छात्रों की अधिगम कठिनाईयों को दूर करने में सहायक होता हैं ।
- कक्षोन्नति छात्र के आयु स्तर के अनुरूप अधिगम उपलब्धि के वर्गीकरण का आधार है ।
- अधिगम प्रक्रिया को क्रिया के आधार पर दो भागों में वर्गीकृत किया गया हैं –
    - मौखिक अधिगम अनुभव
    - अमौखिक अधिगम अनुभव

2.12 प्रगति की जाँच –

1) निदानात्मक परीक्षण में महत्व दिया जाता है –

(अ) सही उत्तरों को

(ब) गलत उत्तरों को

(स) दोनों को

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

2) आकलन का उद्देश्य है –

(अ) तकनीकी ज्ञान प्रदान करना

(ब) निदानात्मक उपचार देना

(स) कौशल का विकास करना

(द) अंक प्रदान करना ।

3) अधिगम के आकलन में सम्मिलित है –

(अ) रचनात्मक आकलन

(ब) योगात्मक आकलन

(स) रचनात्मक एवं योगात्मक दोनों ही

(द) इनमें से कोई नहीं ।

4) आकलन शिक्षक की सहायता करता है –

Scanned with CamScanner

(अ) शिक्षण विधि का चयन करने में

(ब) कक्षाओं का व्यवस्थापन करने में

(स) विद्यार्थियों को वैयक्तिगत रूप से जानने में

(द) उपर्युक्त सभी ।

5) **आकलन वैधानिक पृष्ठपोषण प्रदान करता है –**

(अ) छात्र के ज्ञान के संदर्भ में

(ब) छात्र की आवश्यकता के संदर्भ में

(स) छात्र के प्रदर्शन के संदर्भ में

(द) उपर्युक्त सभी ।

2.13 नियत कार्य / गतिविधियाँ

प्र. 1 : आकलन को परिभाषित कीजिए ।

प्र. 2 : शिक्षण में आकलन की भूमिका के महत्व को समझाइए ।

प्र. 3 : निदानात्मक परीक्षण एवं उपलब्धि परीक्षण में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

प्र. 4 : ग्रेडिंग प्रणाली पर नोट लिखिए ।

प्र. 5 : आकलन एवं स्थानन के अंतः संबंध को समझाइए ।

प्र. 6 : "कक्षोन्नति (Promotion) छात्रों की अधिगम उपलब्धि को बतलाता है ।" इस कथन को विस्तार से समझाइए।

प्र. 7 : स्थानन (Placement) पर नोट लिखिए । स्थानन प्रोफार्म तैयार कीजिए ।

2.14 चर्चा के बिंद् – "स्थानन (Placement)"

.....

.....

Scanned with CamScanner

.....

.....

2.15 स्पष्टीकरण के बिंदु – "ग्रेडिंग की उपयोगिता"

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.16 संदर्भ सूची

- पाल, हसंराज एवं शर्मा, मंजूलता, वाणिज्य शिक्षण, क्षिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली (2010)
- उपाध्याय, राधावल्लभ एवं जायसवाल, सीताराम, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा (2015)
- डॉ. विपिन अस्थाना एवं श्वेता अस्थाना,मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा (2014)
- श्रीवास्तव, वी. एन., मापन एवं मूल्यांकन, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (2009)
- कुलश्रेष्ठ,ए . के. एवं कुलश्रेष्ठ,एन.के. विज्ञान शिक्षण, आर. लाल बुक डिपो,मेरठ (2014)
- कुलकर्णी, टी.एन. शैक्षिक प्रौद्योगिकी, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (2014)

Scanned with CamScanner